RNI NO. 04/14/01/07765/04

चहकती चेतना

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष -1 अंक-1 दिसम्बर, 2006

प्रधान संपादक – विराग शास्त्री, जबलपुर

स्वाद का लोभ

ईर्ष्यावान नगर के राजा का नाम कीर्तिवीर्य था। उसकी रानी का नाम रेवती था। सुभौम उनका एक ही पुत्र था। उसके जयसेन नाम का रसोईया था। एक दिन भोजन के समय रसोईया ने चक्रवर्ती सुभौम को गरम-गरम खीर परोसी। गरम खीर से चक्रवर्ती का मुंह जलने लगा। उसने गुस्से में आकर गरम खीर का बर्तन रसोईया के सिर पर पटक दिया, जिससे उसका सिर जल गया और वह कष्ट से मरकर लवण-समुद्र में व्यंतर देव हुआ। जब उसको कुअवधिज्ञान से अपने पूर्व भव का ज्ञान हुआ तो उसको चक्रवर्ती पर बहुत गुस्सा आया। तब वह तपस्वी का वेश बनाकर चक्रवर्ती के पास पहुँचा। उसके हाथ में मधुर और सुंदर फल थे। उसने चक्रवर्ती को वे फल दिये, जिन्हें खाकर चक्रवर्ती बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उस तापस से कहा-महाराज !यह फल तो बहुत मीठे हैं, तुम इनको कहां से लाये हो और अब कहाँ मिलेंगे ?तापस रूपधारी व्यंतर देव ने कहा- कि समुद्र के मध्य में एक छोटा सा टापू है, वहाँ मैं निवास करता हूँ। यदि आप इस गरीब पर दया करके मेरे घर को पवित्र करो तो अनेक फल भेंट में प्रदान करूंगा। चक्रवर्ती लोभ में आकर व्यंतर के बहकावे में आ गया और उसके साथ चल दिया। रास्ते में व्यंतर ने सुभौम चक्रवर्ती से कहा - कि यदि तुझे वे मीठे फल चाहिये तो तुझे पानी में णमोकार मंत्र लिखकर पैर से मिटाना होगा। पहले तो सुभौम ने मना किया, परंतु व्यंतर के बार-बार कहने और फलों के लोभ से उसने पानी में णमोकार मंत्र लिखकर पैर से मिटाने का महाभयंकर पाप किया।

णमोकार महामंत्र को पैर से मिटाने की बुरा भावना से वह सुभौम तुरंत पानी में गिरकर मर गया और सातवें नरक में गया।

देखा बालको ! णमोकार मंत्र के अपमान से उसे बुरी गति में जाना पड़ा - इसलिये कभी भी णमोकार मंत्र का अपमान नहीं करना।

आराधना कथा-कोष से साभार ....

नये वर्ष का स्वागत

स्वस्ति जैन, जबलपुर

नूतन – प्रतिमा ओ प्रतिमा ! जल्दी से तैयार हो जाओ। मैं दस मिनिट में ड्रेस बदल कर आती हूँ।

प्रतिमा – क्यों कहीं चलना है क्या ? और इतनी रात को –पता है 9 बज रहे हैं।

नूतन – अरे यार तू भी गजब करती है आज 31 दिसम्बर है न। अरे बाबा आज रात को 12 बजे के बाद नया वर्ष प्रारंभ हो रहा है न। तो स्वाति ने अपने घर में पार्टी रखी है वहीं चलना है और इस पार्टी का मजा तो रात में ही आता है चलो जल्दी करो अपनी सारी सहेलियां जा रही हैं।

प्रतिमा – मुझे नहीं जाना।

नूतन – पर क्यों ?

प्रतिमा – मुझे पता है वहाँ क्या होगा। डान्स मौजमस्ती हँसी मजाक और खाना पीना।

नूतन – अरे यार ये ही तो लाइफ है और ये तो नये वर्ष का सेलिब्रेशन है।

प्रतिमा – मुझे समझ में नहीं आता –किस बात का सेलिब्रेशन है। क्या अंतर है 31 दिसम्बर और 1 जनवरी में ? क्या कुछ उपलब्धि हुई है ? क्या हमारे जीवन में कुछ नवीनता आई है ? क्या हमारे परिणामों में विशुद्धि बढ़ी है या कषायें कम हुई हैं , जो हम नये साल का स्वागत करें। सब कुछ वैसा ही तो है।

नूतन – तुमसे तो बात करना ही बेकार है ? हमेशा उपदेश ही देती हो।

प्रतिमा – बात उपदेश की नहीं , जरा विचार तो करो ये तो ईसाइयों का नया वर्ष है। अपना नया वर्ष तो वीर निर्वाणदिवस दीपावली से ही प्रारंभ हो गया। सच्चा नयावर्ष तो तब मनाया गया था।

नूतन – बात तो तुम सच कह रही हो।

प्रतिमा – नूतन वास्तव में जिस दिन हमें आत्मज्ञान हो जाये वह दिन ही हमारा नया वर्ष है। हमारा परिग्रह कम हो , हम अपना आचरण शुद्ध करें –कोई नई धार्मिक बात तो हो?

नूतन – तू बता मैं क्या करूँ ?

प्रतिमा – तुम रात्रि का भोजन छोड़ दो। इससे होने वाले अनंत पाप से तुम बच जाओगी– ये ही तुम्हारा नया वर्ष होगा।

नूतन – प्रतिमा , तो फिर मैं आज से आजीवन रात्रि भोजन त्याग का नियम लेती हूँ।

प्रतिमा – वाह ये हुई न बात। हैप्पी न्यू ईयर।

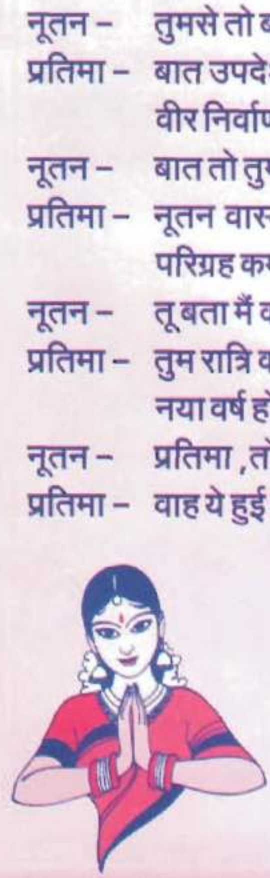

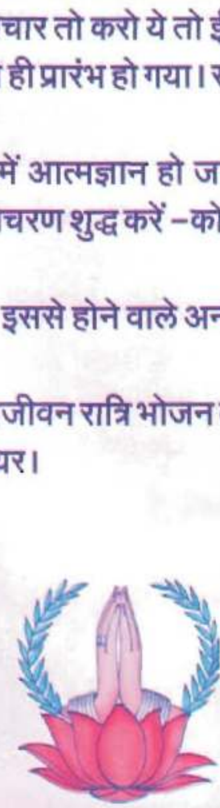

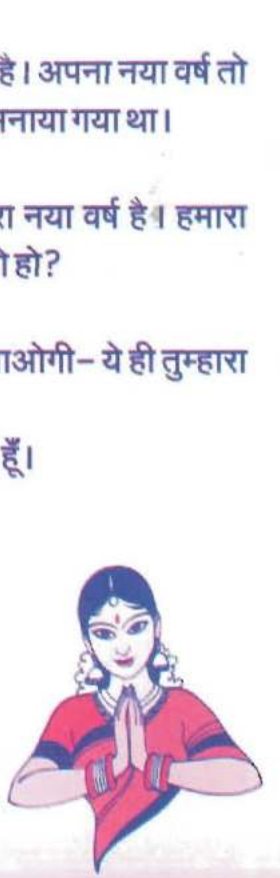

प्रार्थना

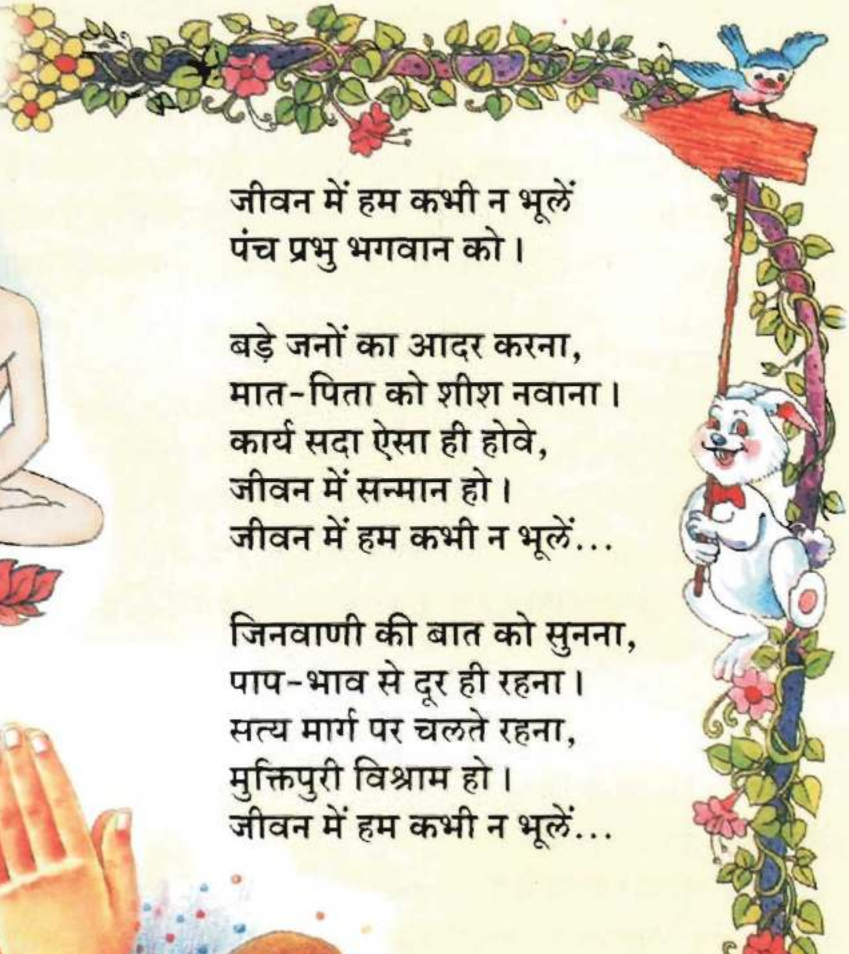

जीवन में हम कभी न भूलें
पंच प्रभु भगवान को।

बड़े जनों का आदर करना,
मात-पिता को शीश नवाना।
कार्य सदा ऐसा ही होवे,
जीवन में सन्मान हो।
जीवन में हम कभी न भूलें...

जिनवाणी की बात को सुनना,
पाप-भाव से दूर ही रहना।
सत्य मार्ग पर चलते रहना,
मुक्तिपुरी विश्राम हो।
जीवन में हम कभी न भूलें...

हमारे आराध्य नवदेव
अरहंत देव

हमारे पूज्य पंचपरमेष्ठी में प्रथम परमेष्ठी का नाम अरहंत परमेष्ठी है । णमोकार मंत्र में हम सबसे पहले णमोअरहंताणं कहकर अरहंत-प्रभुको नमस्कार करते हैं अरहंत भगवान ने ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय और अंतराय इन चार घातिकर्मों का नाशकर इन्होंने अरहंत पद प्राप्त किया है। उनके अनन्तदर्शन आदि अनन्त चतुष्टय प्रकट हुये हैं। वे अपने केवलज्ञान में तीनलोक तीनकाल के पदार्थों को एक साथ जानते हैं। ये अरहंत पद उन्होंने अपनी आत्मा की आराधना से प्राप्त किया है। यदि हम अपनी आत्माको जानें-तो हम भी अरहंत बन सकतेहैं।

सिद्ध

आचार्य

उपाध्याय

साधु

जिनवाणी

जिनबिम्ब

जिनधर्म

जिनालय

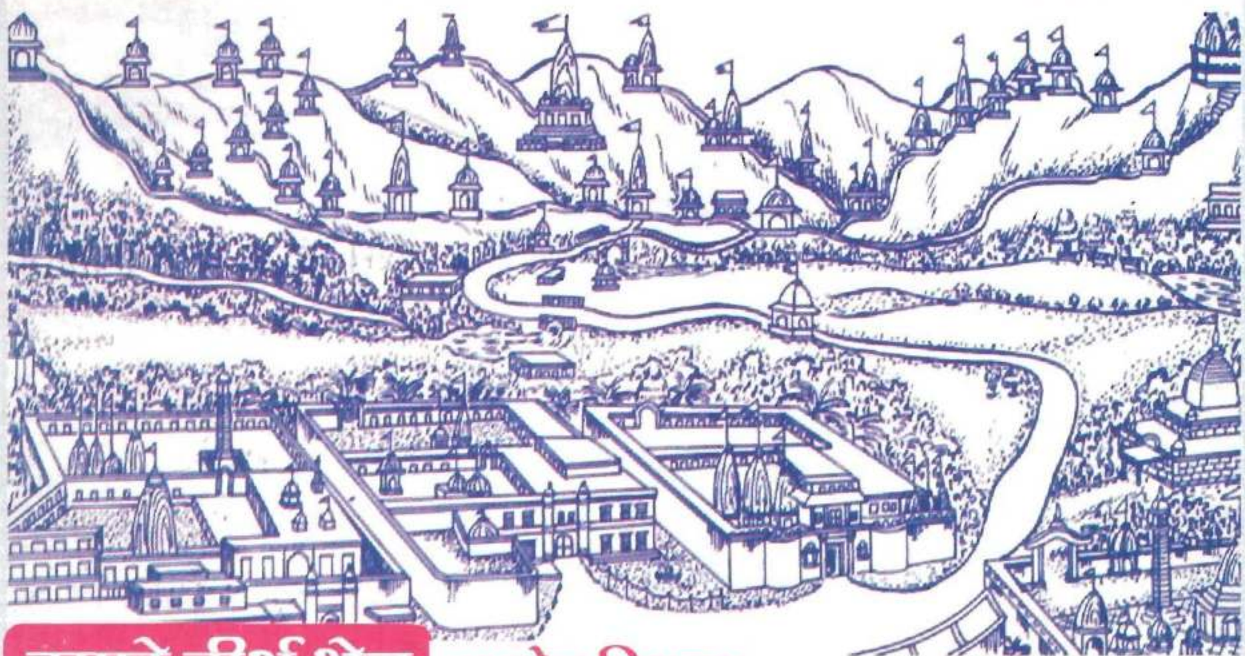

हमारे तीर्थ क्षेत्र *सम्मेद शिखर*

यह तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र है। यहाँ से प्रत्येक काल के चौबीस तीर्थंकर निर्वाण प्राप्त करते हैं।

यहाँ विशाल पर्वत पर 25 टोंक (मंदिर) हैं जहाँ पर तीर्थंकरों के चरण चिन्ह बने हुये हैं। यहाँ से वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों में से 20 तीर्थंकरों ने मोक्षपद प्राप्त किया है। सबसे पहले गौतम गणधर की टोंक एवं सबसे अंत में भगवान पार्श्वनाथ की टोंक है। पहाड़ की कुल परिक्रमा 27 कि.मी. है।

यह शाश्वत निर्वाणक्षेत्र कहलाता है अर्थात् तीर्थंकर हमेशा यहीं से निर्वाण प्राप्त करते हैं। तीर्थंकरों के अतिरिक्त सम्मेद शिखर से असंख्य मुनिराजों ने भी आत्मध्यान के द्वारा मोक्षपद प्राप्त किया, इसीलिये इस पर्वत का कण-कण पूजने योग्य है। यहाँ की वंदना अवश्य करना चाहिए। पर्वत के नीचे अनेक दर्शनीय मंदिर और संग्रहालय आदि हैं।

पाप पाप बुरा है काम कहाता, नरक निगोद हमें ले जाता,
उनकी संख्या होती पांच, मत आने दो उनकी आंच।
परिभाषा उनकी बतलाओ, पांच पाप को दूर भगाओ,
किसी जीव को नहीं सताओ, सब जीवों के प्राण बचाओ ॥

कविता

क्या अच्छा है

सच्चरित्र विद्वान जनों की संगति में रहना है अच्छा।
अपने मन की बात सदा ही साफ-साफ कहना है अच्छा॥

बुरा नहीं हो कभी किसी का वही काम करना है अच्छा।
मिलें दुष्ट जो कहीं वहां से जल्दी ही हट जाना है अच्छा॥

सींग और नख वाले पशुओं से सावधान रहना है अच्छा।
जो है अपना देश ,देश का वही वेश धरना है अच्छा॥

जितनी बुरी आदतें होवें उन सबको खोना है अच्छा।
उचित समय पर खाना पढ़ना, उचित समय पर सोनाअच्छा॥

जिन विषयों का ज्ञान नहीं हो वहाँ मौन रहना है अच्छा।
वश में करने को सबको बस मीठी बोली है होना अच्छा॥

जाना माना न होय जहाँ पर उसी जगह जाना है अच्छा।
खीर पराई से अपना है रुखा -सूखा भोजन अच्छा॥

पंच प्रभु और जिनवाणी का विनयगान गाना है अच्छा।
दीन-दुःखी के प्रति मन में दया भाव रखना है अच्छा॥

संकलन- कु. सुधा जैन

चहकती चेतना- सदस्यता फार्म

नाम ____________ पिता का नाम ____________

जन्म तिथि ____________ पता ____________

पिन कोड ____________ फोन नं. ____________

इस फार्म के साथ 250/- [redacted]/- की राशि नगद/चैक/ड्राफ्ट 'चहकती चेतना' के नाम से बनाकर प्रेषित करें। यह पत्रिका आपको तीन माह में एक बार तीन वर्ष तक भेजी जायेगी।

सर्वोदय 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर (म.प्र.) 482002 मो. 9329051008

झंडा किसने फहराया

Who Flown the flag

यहाँ तीन बच्चे हैं-

1. चेतना
2. शाश्वत
3. सम्यक्त्व

बताओ ! इन तीनों में से झंडा किसने फहराया है ?

चित्र देखो- कहानी लिखो

Look this Picture & Write Story

इस चित्र को ध्यान से देखें और एक सुंदर सी कहानी लिखकर भेजें। ध्यान रहे कहानी मौलिक (स्वयं के द्वारा लिखी हुई,) धार्मिक, जैन सिद्धांतों के या किसी शिक्षा को बताने वाली होना चाहिए। शब्द सीमा अधिकतम 150 हो। कहानी सुंदर लिखावट अथवा टाइप की हुई (हिन्दी,अंग्रेजी या गुजराती) में होना चाहिए। सर्वोत्कृष्ट प्रथम तीन कहानियों को पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा एवं उन्हें पुरुस्कृत किया जायेगा।

हमारा पता है-

कहानी विभाग, सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर-482002 (म. प्र.)

बिल्ली मौसी

बिल्ली मौसी बिल्ली मौसी
कहो कहाँ से आई हो ?
तुमने कैसे पाप किये जो
ऐसी गति में आई हो ।

क्या बतलाऊँ ज्ञायक भाई
कैसे कैसे पाप किये ।
मायाचारी झूठ पाप के
मैंने अत्याचार किये ।

बिल्ली मौसी ऐसी गलती
आगे कभी नहीं करना ।
कार्य करो तुम ऐसा मंगल,
चार गति का क्षय करना ।

मेरी प्यारी नानी

मेरी प्यारी नानी है
लगती बड़ी सयानी है
जिनमंदिर नित जाती है
मुझे संग ले जाती है ।
भक्ति में वो रमती है ।
ध्यान सदा वो करती है
स्वाध्याय तो रोज ही करती
मुझको भी समझाती है
आत्म गीत सुनाती है
जो सबको सुखदानी है ।
मेरी प्यारी नानी है....

– विराग जैन

इन्हें भी जानिये

(1) जय जिनेन्द्र शब्द का उच्चारण सर्वप्रथम आचार्य भद्रबाहु ने किया था।

(2) जन्म से मृत्यु पर्यंत आजीवन नग्न रहने वाले आचार्य जिनसेन थे।

(3) जैनदर्शन का संस्कृत में सबसे पहला ग्रंथ तत्त्वार्थ सूत्र है।

(4) हिन्दी साहित्य की सबसे पहली आत्मकथा जैन विद्वान् पं. बनारसीदास द्वारा रचित अर्द्धकथानक है।

(5) आचार्य कुन्दकुन्द ने 11 वर्ष की उम्र में मुनि दीक्षा ली थी।

(6) इतिहास के प्रसिद्ध दानवीर भामाशाह जैन थे।

(7) दीवान अमरचंद ऐसे जैन श्रावक थे जिन्होंने अपने दृढ़-संकल्प से शेर को जलेबी खिलाई।

(8) प्रसिद्ध सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य जैन था।

(9) चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री चाणक्य ने जैन मुनि से दीक्षा ली थी।

(10) हिन्दी अपभ्रंश भाषा के प्रथम जैन कवि स्वयंभू हैं, जिन्होंने अपभ्रंश भाषा का ग्रंथ 'पउम चरिउ' (रामायण) लिखा है।

चित्र बनाओ

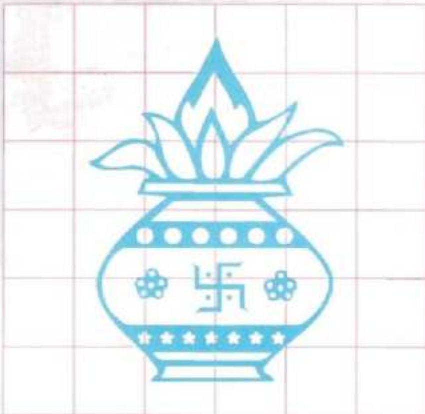

Draw the picture

रंग भरो

Colour the picture

नीचे दिये चित्र में रंग भरिये

अरिहंत पिताजी मेरे
जिनवाणी माता मेरी,
मेरे भैया अरिहंत सहज है होना

(अंतर खोजिये) उत्तर –

1. महावत का भाला, 2. महावत के पेंट का रंग 3. राजा का फूल 4. रथ का गुंबद 5. हाथी का दांत 6. हाथी के दांत का कडा 7. हाथी के पैर की पायल 8. हाथी के पैर का नाखून 9. हाथी की पूंछ 10. हाथी की पूंछ का जेवर

प्रेरक प्रसंग

लगन

जयपुर के प्रसिद्ध विद्धान पं. टोडरमलजी एक ग्रंथ की रचना कर रहे थे। माँ ने भोजन में नमक डालना बंद कर दिया क्योंकि नमक से प्रमाद आता था। टोडरमलजी ग्रंथ लिखने में इतने तल्लीन रहते थे कि उन्हें भोजन के स्वाद का ध्यान ही नहीं रहा।

छः माह बाद जब एक दिन टोडरमलजी ने अपनी माँ से पूछा कि माँ आज भोजन में नमक नहीं डाला क्या ? तो माँ ने कहा कि लगता है तुमने आज ग्रन्थ की रचना पूरी कर ली क्योंकि मैंने पिछले छह माह से भोजन में नमक नहीं डाला। ऐसी थी पं. टोडरमलजी की लगन।

हम भी यदि इतनी लगन से पढ़ाई या कोई भी कार्य करें तो हम हर कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते है।

परिणाम

प्राचीन समय में कालसौरिक नाम का व्यक्ति रोज 500 भैंस अपनी आजीविका के लिये मारता था।लेकिन कालसौरिक का बेटा सुलसा परम दयालु था। उसके हृदय में जीवों के प्रति अत्यंत करुणा थी। यह देखकर कालसौरिक ने अपने रिश्तेदारों को बुलाकर कहा कि मेरा बेटा सुलसा हिंसा नहीं करता।ऐसे में उसकी आजीविका का क्या होगा ? मेरे मरने के बाद इसकी जिम्मेदारी आप सब पर होगी। कालसौरिक के मरने के बाद परिवार का दायित्व सुलसा को सौंपा गया और उसे एक तलवार देकर भैंस को मारने के लिये कहा गया। यह सुनकर सुलसा ने कहा कि मैं यह हिंसा का पाप नहीं कर सकता। यदि आपको हिंसा ही पंसद है तो मैं अपना पैर काट देता हूँ।

यह देखकर सभी ने उसे रोका और पूरे परिवार ने कभी हिंसा न करने का संकल्प ले लिया।

संकलन - पं. राजेन्द्र कुमार जी जबलपुर

दिमाग की कसरत

नीचे कुछ धार्मिक शब्दों के अक्षरों को आगे पीछे कर दिया है। आपको सही शब्द सोचकर लिखना है।

उल्टा-पुल्टा नाम	सही नाम
त म ा अ ा	आत्मा
भ ा न ि य ा र	
प ु ि त ा न ह र र	
ण स श व म र	
ु ा र म न ि ज	
ह त ि ं ि द स ा	

निम्न पंक्तियों में पांच मुनिराजों के नाम खोजिये।

1. सजग जलकर राख बन गया ______
2. अभी मत जाओ ______
3. आसू कौशल साथ में मंदिर जायेंगे ______
4. दशानन कुल का नाश करने वाला हुआ ______

उत्तर इसी अंक में

बूझ पहेली बूझ

अष्टकर्म से न्यारा जीव ।
जन्म मरण से सदा अतीत ॥

प्रथम दो कटे नार बनूं ।
अंत कटे तो मै गिर जाऊ ॥

पशु भी सारा बैर भुलाते ।
स्थान कौन जहां देव भी आते ॥

मानस्तंभ को देखकर गल गया उसका मान,
सम्यदर्शन पाकर बनें स्वयं भगवान ॥

तीर्थंकरों का मुक्ति नगर है
सब क्षेत्रों में क्षेत्र प्रथम है ।

1. सिद्ध 2. गिरनार 3. समवशरण
4. गौतम गणधर 5. सम्मेद शिखर

अब नहीं तोड़ूँगा

अनुराग जैन, जबलपुर

चंचल छठवी कक्षा में पढ़ता था। बचपन से ही चंचल बहुत शैतानी करता था। वह स्कूल से आते-जाते समय रास्ते में आने वाले पेड़ों की टहनियाँ तोड़ता तो कभी -कभी फूल तोड़ता। घर पर भी आंगन के पेड़ की फूलपत्ती को तोड़ देता। माँ के बार-बार समझाने और डाँटने पर भी उसने अपनी आदत नहीं छोड़ी।

एक दिन वह रात में गहरी नींद में सोया था-अचानक उसने सपने में देखा कि कुछ राक्षस जैसे लोग उसे पकड़कर ले गए और उसे गहरी गुफा में एक सरदार के सामने खड़ा कर दिया। सरदार ने पूछा-इस बालक ने क्या अपराध किया है? तो एक राक्षस बोला- सरदार ! इसने कई पेड़ों की टहनियाँ तोड़ी हैं। सरदार बोला - इसके हाथ तोड़ दिये जायें। दूसरा राक्षस बोला- सरदार ! इसने कई फूलों को तोड़कर मसल दिया है। सरदार बोले-इसने गंभीर अपराध किया है इसके पैर तोड़कर इसे अपंग बना दिया जाये। सरदार का आदेश पाकर कुछ राक्षस उसके हाथ पैर तोड़ने के लिए उसके पास आने लगे तो वह घबराकर चिल्लाने लगा - बचाओ - बचाओ, अब नहीं तोड़ूँगा और नींद में चंचल की आवाज सुनकर चंचल की माँ दौड़ती हुई आई और पूछा- क्या हुआ बेटा? क्या कोई बुरा सपना देखा? फिर चंचल ने माँ को पूरा सपना सुनाया।

माँ ने कहा- मैंने तुम्हें बहुत समझाया था कि पेड़-पौधे भी हमारे जैसे जीव हैं। आखिर उन्हें भी तो दर्द होता है। चंचल ने दृढ़ता पूर्वक कहा - माँ ! अब मैं संकल्प लेता हूँ कि मैं अब कभी पेड़ -पौधों को कष्ट नहीं पहुँचाऊँगा।

रात्रि भोजन : एक विचारणीय तथ्य

मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिये उचित आहार ,सही विचार, सदाचारमय आचरण की आवश्यकता होती है। भोजन उचित मात्रा में व सही समय पर किया जाए तो वह बहुत लाभदायक होता है।

जैनदर्शन वैज्ञानिक धर्म है। विज्ञान के अनेक सिद्धांत जैन दर्शन पर आधारित हैं। जैनदर्शन के अनुसार सूर्यास्त के पहले भोजन कर लेना चाहिए। रात्रि में जीवों की मात्रा अधिक हो जाती है और अनेक जीव इतने छोटे होते हैं कि वे आँखों से दिखाई नहीं देते और हमारे भोजन में आकर गिरते हैं। जो भोजन के साथ हमारे पेट में चले जाते हैं, इससे हमें हिंसा का बहुत पाप लगता है।

रात्रि भोजन न करने संबंधी बातें –

(1) विज्ञान के अनुसार हमें सोने से चार घंटे पूर्व भोजन कर लेना चाहिए। इससे भोजन के पचने के लिये पर्याप्त समय मिल जाता है और हम अनेक बीमारियों से बच जाते हैं।

(2) जैन का अर्थ होता है जो भगवान जिनेन्द्र की आज्ञा माने । जिनेन्द्र भगवान ने रात्रि भोजन में हिंसा का दोष बताया है उनकी बात नहीं मानेंगे तो हम जैन कैसे कहलाएगें?

(3) रात्रि में पशु भी भोजन नहीं करते तो क्या हमारा रात्रि भोजन करना उचित है?

(4) सूर्य के प्रकाश में अल्ट्रावायलेट किरणें एवं इन्फ्रारेड अदृश्य किरणें होती है। जिससे दिन के प्रकाश में जीवाणु उत्पन्न नहीं होते।

(5) सूर्य के प्रकाश में पौधे आक्सीजन छोड़ते हैं और भोजन पचाने के लिए आक्सीजन की आवश्यकता होती है, अत: दिन में ही भोजन करना चाहिए।

(6) मुंह में लार होने से पाचन सही होता है और यह लार दिन में अधिक बनती है। रात्रि में लार कम बनने से सही पाचन नहीं होता, जिससे डायबिटीज नामक बीमारी होती है।

(6) मुंह में लार होने से पाचन सही होता है और यह लार दिन में अधिक बनती है। रात्रि में लार कम बनने से सही पाचन नहीं होता, जिससे डायबिटीज नामक बीमारी होती है।

जिनवर ने बतलाया है,
हमको समझ में आया है।
रात्रि में भोजन नहीं करेंगे,
बात प्रभु की मानेंगे ॥
जो रात्रि भोजन करता है,
पाप उसे तो लगता है।
नरक गति में जाता है,
दुख ही दुख वह पाता है ॥
रात्रि भोजन त्यागेंगे,
जैनी हम कहलायेंगे ॥

सर्वोदय जन्म दिवस उपहार योजना

एक वर्षीय सदस्यता

नाम :........................ पिता का नाम ....
जन्मतिथि................. पता ....
....
फोन नं. .... मो. ....
पिन कोड...............

1 वर्षीय सदस्यता राशि 150/-

संयोजक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन (रजि.)
'सर्वोदय' 702, जैन टेलीकॉम, दुर्गा मंदिर के पीछे, फूटाताल, जबलपुर - 2 (म.प्र.)

आपके नगर के कोरियर का नाम ....
150/- रु. के साथ यह फार्म भरकर भेजिये और पाइये अपने जन्म दिवस के धार्मिक शुभकामनाओं के साथ आकर्षक उपहार

कृपया इस फार्म को फाड़ें न इसकी फोटोकापी करवाकर या इस प्रारुप में भरकर भेजें।

हमारी बाल प्रतिभाएँ

पाठशाला का चमत्कार

बात दिल्ली के नांगलोई उपनगर की है। यहां पर निधि नाम की बच्ची रोज वीतरागविज्ञान पाठशाला जाती थी। उसकी उम्र ९ वर्ष की थी। पाठशाला में वह बहुत उत्साह से आती थी। पाठशाला के गुरुजी ने उसे बताया कि हम सब आत्मा हैं और हमारे में ज्ञान गुण है, शरीर अजीव है। शरीर नष्ट हो सकता है किंतु आत्मा का नाश नहीं होता। शरीर आत्मा साथ में रहते हुए भी स्वभाव से भिन्न-भिन्न हैं। इन बातों को निधि ने समझ लिया था। पाप कर्म के उदय से उस नन्ही सी बच्ची को लीवर कैंसर हो गया और वह सुंदर सी बच्ची सूख गई। डाक्टरों ने उसे आलू और गाजर का जूस पीने के लिए कहा - परंतु निधि ने कहा - मैं आलू और गाजर नहीं खाऊँगी क्योंकि उसमे अनंत जीव होते हैं। डाक्टरों ने निधि के पिता से कहा कि इसकी बीमारी का इलाज असंभव है। निधि को घर में लाकर पिताजी बहुत रोने लगे तो निधि ने पूछा कि पापा आप क्यों रो रहे हैं तो पिता जी ने कहा बेटी तुझे बहुत दर्द हो रहा है न। तो निधि बोली पापा मैं तो जीव हूँ मुझे कुछ दर्द नहीं हो रहा। निधि की बीमारी बढ़ती गई परंतु पाठशाला के संस्कारों के प्रभाव से निधि दर्द को शांत भाव से सहती रही और पाँच पांडवों की कथा सुनते-सुनते उसके प्राण निकल गए। इस संवेदनशील घटना से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि पाठशाला में ज्ञान और संस्कार तो मिलते ही हैं साथ ही संकटों में धैर्य और समता बनाए रखने की प्रेरणा प्राप्त होती हैं। इसलिए हमें प्रतिदिन जैन पाठशाला अवश्य जाना चाहिए।

इस स्तंभ के अंतर्गत हम जैन समाज की उन बाल प्रतिभाओं का परिचय प्रकाशित करेंगे जिन्होंने किसी विशेष क्षेत्र में (धार्मिक, सामाजिक, संगीत, गायन, अध्ययन आदि) विशेष योग्यता प्राप्त की है।

आपके यहाँ कोई बालक-बालिकायें हो अथवा आपकी जानकारी में हों तो आप उसकी उपलब्धि, नाम, पता, फोटो सहित भेजें। पर ध्यान रहें उसकी उम्र १५ वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए।

क्या आप जानते हैं ?

हम इस स्थायी स्तंभ में आपको विभिन्न जानकारियाँ देंगें।

पढ़िये : प्रथम स्तंभ में तीर्थंकर प्रभु के जीवन की कुछ विशेषतायें

(1) तीर्थंकर की माता को तीर्थंकर के जन्म के पूर्व सोलह स्वप्न आते हैं।

(2) तीर्थंकर का जन्माभिषेक सुमेरु पर्वत की पांडु कशिला पर 1008 कलशों से होता है।

(3) तीर्थंकर के दाहिने पैर के अंगूठे में एक चिन्ह होता है, जो तीर्थंकर का चिन्ह माना जाता है। जैसे– भगवान महावीर का चिन्ह–सिंह है।

(4) केवलज्ञान के पूर्व तीर्थंकर आहार तो लेते हैं परन्तु उनका निहार (शौच आदि) नहीं होता।

(5) तीर्थंकर के वस्त्र, आभूषण, भोजन आदि की व्यवस्था स्वर्ग के देव करते हैं।

(6) तीर्थंकर के गर्भ में आने के 6 माह पूर्व से लेकर जन्म तक 15 माह प्रतिदिन रत्नों की वर्षा होती है।

(7) तीर्थंकर मुनिदीक्षा के पश्चात् केवलज्ञान होने तक मौन रहते हैं।

(8) तीर्थंकर मुनिराज के पीछी और कमंडल नहीं होते।

(9) तीर्थंकर स्वयं ही ''ऊँ नमः सिद्धेभ्यः'' कहकर दीक्षा लेते हैं।

(10) तीर्थंकर के कोई गुरू नहीं होते।

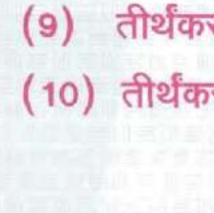
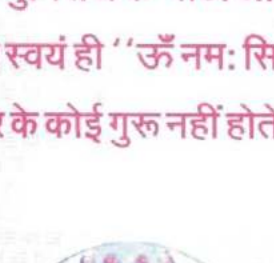

अंतर खोजिये

Find 10 Differences

यहां एक जैसे दो चित्र दिये गए हैं परंतु इन दोनों चित्रों में दस अंतर हैं वे अंतर आपको खोजना है। पांच अंतर बतलाने वाला कहलायेगा - बुद्धिमान ! उससे अधिक अंतर खोजने वाला कहलायेगा - तेजस्वी।

+ इसके उत्तर इसी अंक में हैं।

Pussy cat

Pussy cat pussy cat, where have you been
I had been to jungle to see muniraj

Pussy cat Pussy cat, What said muniraj
Muniraj said see you we have been

Pussy cat now tell us what will you do
Pussy cat said I will know my soul only

Very sweet very sweet...

Very Sweet very sweet Jain Dhram
I love I love Jain Dhram

I shall go on Moksh Marg
I shall take my Jain Dhram
Very sweet........

Do not take any tention
Always says my Jain Dhram
Very sweet.........

You can solve any problem
If you take our Jain Dhram.
Very sweet.............

-Virag Jain

राजा की कहानी

एक था राजा। वह जंगल में शिकार करने गया। जंगल में एक मुनिराज थे। राजा ने मुनिराज को नमस्कार किया। मुनिराज ने कहा - हे राजन् शिकार करने से पाप होता है। पाप से जीव नरक में जाता है वहाँ वह बहुत दुःखी होता है।

यह सुनकर राजा रोने लगा और मुनिराज से पूछा - प्रभु मेरा पाप कैसे दूर हो और मैं कैसे सुखी होऊँ ?

मुनिराज ने कहा - हे राजन् सुख तेरी आत्मा में ही है। तू शिकार करना छोड़ दे और आत्मा की पहचान कर, इससे तू सुखी होगा। इसके बाद राजा ने शिकार करना छोड़ दिया और मुनिराज के पास रहकर आत्मा की पहचान की तथा सुखी हुआ। अंत में वह संसार से छूटकर मोक्ष में गया। बालकों पाप छोड़ो, और अपनी आत्मा को समझो तो सुखी होगे।

ABC of Jain Dharama

A for O my ADINATH
Be with me in every path
Never forget naughty son
You are father super one

Sri AJITNATH is your name
What to say for your fame
You are winner best of all
I am missing every ball.

Save me SAMBHAVNATH dada
Show me true way O dada
How to walk in blackish night
Give me your super light.

That one is my golden day
ABHINANDAN swami I Pray
Tell me o god where you stay
How to come you show me way.

जैनधर्म की ऐ, बी, सी

आ से आदिनाथ प्रभु आप,
जग का हरें सकल संताप।
उर में सतत् विराजें आप,
कटे कर्म का यह अभिशाप।

हे अनिमेष अजित स्वामी,
हम सब तेरे अनुगामी।
इन्द्रिय जय कर हम सब भी,
तुम सम बनें मोक्षगामी ।।

संभव प्रभु रक्षक मेरे,
देखत मिटते भव फेरे।।
अंधकारमय रात्रि जहाँ,
करें प्रकाश अपरिमित तहाँ ।।

पाकर अभिनंदन प्रभु शरण,
करते वंदन युगल चरण।
पूज्य प्रभुजी आप जहाँ,
पहुँचे कैसे भक्त वहाँ ?

जीव अजीव छांटिये

जीव ....

अजीव ....

आपकी पेंटिंग

सिम्पी जैन, छिंदवाडा

पेज नं. 18 के उत्तर 1.हाथी का दांत 2.हाथी की पूंछ का केसर 3.हाथी के पैर की पायल 4.हाथी के पैर का नाखून 5.भगवान की धोती का रंग 6.भगवान के हाथ की छड़ी 7.राजा के हाथ का कड़ा 8.हाथी के दांत का केसर 9.रथ का झंडा 10.भगवान का मुकुट।

वर्ग पहेली

1		2	3
4		5	
6		7	8
9			
10		11	

संकेत *शब्द संख्या*

दायें से बायें-

(1) जीव के दो भेदों में से एक (2)

(2) चार कषायों में से एक कषाय- (2)

(4) मोक्ष, पाँच कल्याणक में से एक कल्याणक- (3)

(6) समय, छ:द्रव्यों में से एक द्रव्य- (2)

(7) निर्वाण- (2)

(9) कीर्ति- (2)

(10) पंच परमेष्ठी में से दूसरे परमेष्ठी- (2)

(11) सूर्य, सात वारों में से एक ..वार-(2)

ऊपर से नीचे-

(1) निर्ग्रंन्थ दिगम्बर साधु (2)

(3) आकाश (2)

(5) एक महामंत्र (4)

(6) शरीर (2)

(8)दशलक्षण धर्मों में से एक धर्म (2)

बिंदु मिलाओ - चित्र बनाओ

Joint the dots and make picture

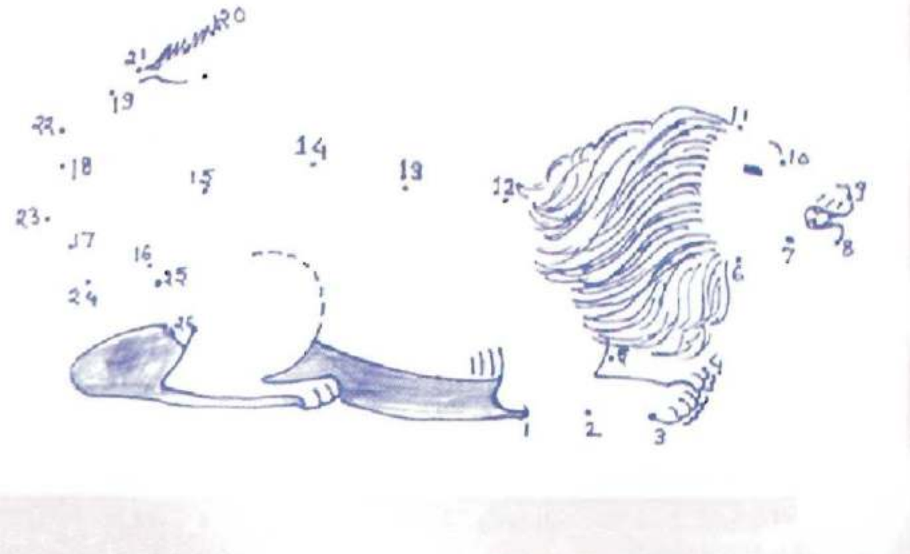

चहकती चेतना 2007

चहकती चेतना के सभी बाल सदस्यों को नये वर्ष की शुभकामनाओं सहित स्नेहिल भेंट

JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28			

MARCH

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

APRIL

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

MAY

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

JUNE

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

JULY

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

AUGUST

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

NOVEMBER

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

श्री ऋषभदेव निर्वाण दिवस - 18 जनवरी
कविवर बनारसीदास जयंती - 29 जनवरी
अष्टान्हिका - 24 फरवरी से 3 मार्च
श्री ऋषभदेव जयंती - 13 मार्च
श्री महावीर जयंती - 31 मार्च
श्री कानजी स्वामी जयंती - 19 अप्रैल
अक्षय तृतीया - 20 अप्रैल
श्रुत पंचमी - 19 जून
वीर शासन जयंती - 30 जुलाई

मोक्ष सप्तमी - 20 अगस्त
रक्षा बंधन - 28 अगस्त
सोलहकारण व्रत - 28 अगस्त से 27 सितम्बर
दशलक्षण व्रत - 16 सितम्बर से 25 सितम्बर
पुष्पांजलि व्रत - 16 सितम्बर से 21 सितम्बर
सुगंध दशमी - 22 सितम्बर
रत्नत्रय व्रत - 24 सितम्बर से 26 सितम्बर
अनंत चतुर्दशी - 25 सितम्बर
श्री भगवान महावीर निर्वाणोत्सव (दीपावली) - 9 नवंबर
श्री कानजी स्वामी स्मृति दिवस - 30 नवम्बर

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

१. क्या भगवान अगरबत्ती और फूलों से प्रसन्न होते हैं?

उ० भगवान वीतरागी हैं, किसी से प्रसन्न भी नहीं होते और नाराज भी नहीं होते।

२. मोक्ष का सही अर्थ क्या है?

उ० दुख से छूटने का नाम मोक्ष है।

३. इस समय भगवान महावीर कहाँ हैं?

उ० इस समय भगवान महावीर सिद्ध शिला पर हैं।

४. दूध-शाकाहारी है या मांसाहारी है?

उ० दूध-शाकाहारी है क्योंकि वह शरीर का अंग नहीं है, दूध प्राप्त करने में पशु को कष्ट नहीं होता।

५. कर्मों का फल इसी भव में मिलता है या अगले भव में?

उ० इस भव में भी और अगले भव में भी।

६. अनादि अनंत का क्या अर्थ है?

उ० जिसका प्रारंभ न हो वह अनादि और जिसका अंत न हो वह अनंत।

७. दुनिया में सबसे गरीब कौन है?

उ० जिसका हृदय छोटा है वह दुनिया में सबसे गरीब है।

८. दीपक से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उ० जैसे दीपक स्वयं को और दूसरों को प्रकाशित करता है वैसे ही हमें अपने ज्ञान और अच्छे आचरण से स्वयं को और दूसरों को प्रेरणा देना चाहिए।

यदि आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न हो तो आप हमें लिख भेजें हम उसका उत्तर प्रकाशित करेंगे।

कवर पृष्ठ पीछे	-	5100/-
कवर पृष्ठ पीछे आधा	-	3100/-
कवर पृष्ठ चौथाई भाग	-	1500/-
अंदर के पृष्ठ पर रंगीन (पूरा पृष्ठ)	-	3100/-
अंदर के पृष्ठ पर रंगीन (आधा पृष्ठ)	-	1500/-
अंदर के पृष्ठ पर रंगीन (चौथाई भाग)	-	1100/-
अंदर पृष्ठ सिंगल कलर (पूरा पेज)	-	2100/-
अंदर पृष्ठ सिंगल कलर (पूरा पेज)	-	1500/-
अंदर पृष्ठ सिंगल कलर (पूरा पेज)	-	1100/-

coming soon
मनोरंजन के साथ, ज्ञान का खजाना
* ज्ञान सोपान एवं मुक्तिद्वार (जैन गेम)
* चेतन चित्रावली - ड्राईंग बुक
* चेतनराजा - ज्ञान का खजाना भाग - 1
* चैतन्य भक्ति लहर-पाठशाला गीत सी.डी.
* आओं मिलायें - कम्प्यूटर गेम
तत्वज्ञान प्रभावना की भावना के साथ
जानकारी एवं प्राप्ति हेतु संपर्क करें
मंगलम् मीडिया इलाहाबाद बैंक के बाजू में, गोलगंज - छिंदवाड़ा 98262 56480, 245624 (07162)

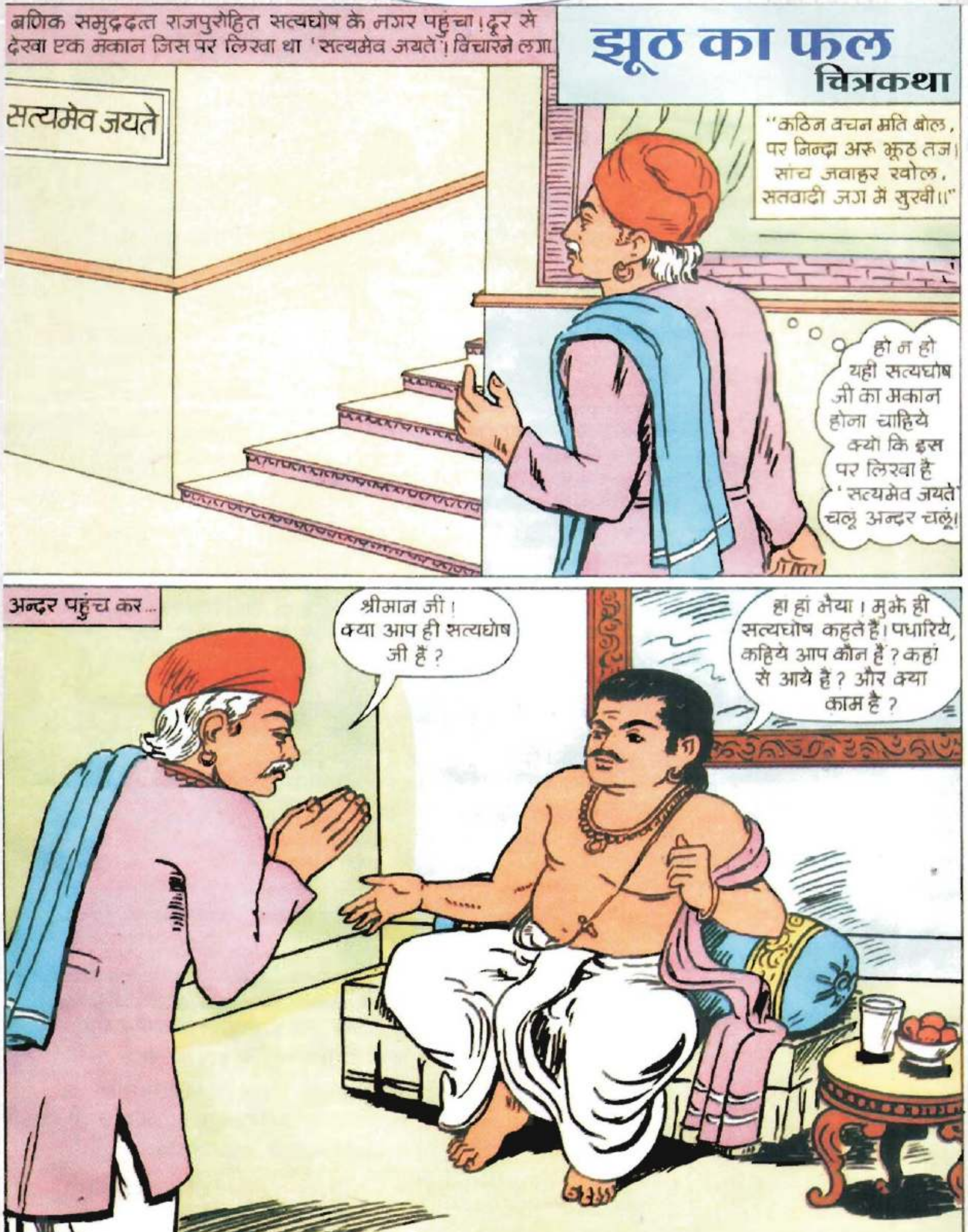
झूठ का फल
चित्रकथा
बणिक समुद्रदत्त राजपुरोहित सत्यघोष के नगर पहुंचा। दूर से देखा एक मकान जिस पर लिखा था 'सत्यमेव जयते'। विचारने लगा
सत्यमेव जयते
"कठिन वचन मति बोल, पर निन्दा अरू झूठ तज। सांच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी॥"
हो न हो यही सत्यघोष जी का मकान होना चाहिये क्यो कि इस पर लिखा है 'सत्यमेव जयते' चलूं अन्दर चलूं।
अन्दर पहुंच कर...
श्रीमान जी! क्या आप ही सत्यघोष जी हैं?
हां हां भैया। मुझे ही सत्यघोष कहते हैं। पधारिये, कहिये आप कौन हैं? कहां से आये हैं? और क्या काम है?

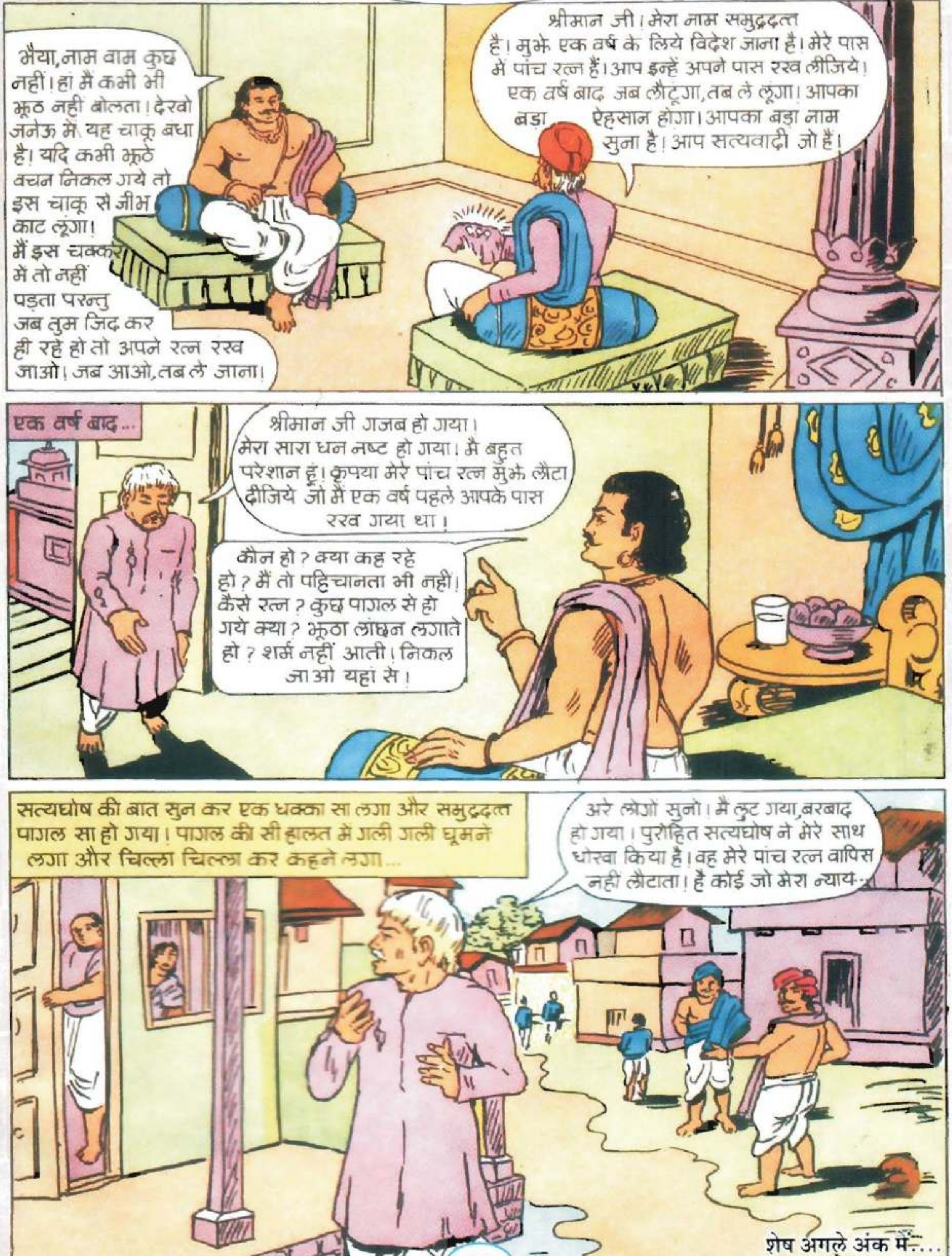
श्रीमान जी। मेरा नाम समुद्रदत्त है। मुझे एक वर्ष के लिये विदेश जाना है। मेरे पास में पांच रत्न हैं। आप इन्हें अपने पास रख लीजिये। एक वर्ष बाद जब लौटूंगा, तब ले लूंगा। आपका बड़ा ऐहसान होगा। आपका बड़ा नाम सुना है। आप सत्यवादी जो हैं।
भैया, नाम वाम कुछ नहीं। हां मैं कभी भी झूठ नहीं बोलता। देखो जनेऊ में यह चाकू बंधा है। यदि कभी झूठे वचन निकल गये तो इस चाकू से जीभ काट लूंगा। मैं इस चक्कर में तो नहीं पड़ता परन्तु जब तुम जिद कर ही रहे हो तो अपने रत्न रख जाओ। जब आओ, तब ले जाना।
एक वर्ष बाद...
श्रीमान जी गजब हो गया। मेरा सारा धन नष्ट हो गया। मै बहुत परेशान हूं। कृपया मेरे पांच रत्न मुझे लौटा दीजिये जो मैं एक वर्ष पहले आपके पास रख गया था।
कौन हो? क्या कह रहे हो? मैं तो पहिचानता भी नहीं। कैसे रत्न? कुछ पागल से हो गये क्या? झूठा लांछन लगाते हो? शर्म नहीं आती। निकल जाओ यहां से।
सत्यघोष की बात सुन कर एक धक्का सा लगा और समुद्रदत्त पागल सा हो गया। पागल की सी हालत में गली गली घूमने लगा और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगा...
अरे लोगों सुनो। मैं लुट गया, बरबाद हो गया। पुरोहित सत्यघोष ने मेरे साथ धोखा किया है। वह मेरे पांच रत्न वापिस नहीं लौटाता। है कोई जो मेरा न्याय--
शेष अगले अंक में...